यस्त्वात्मरतिरेव स्यादात्मतृप्तश्च मानवः ।
आत्मन्येव च सन्तुष्टस्तस्य कार्यं न विद्यते ॥१७॥

यः – जो; तु – लेकिन; आत्म-रतिः – आत्मा में ही आनन्द लेते हुए; एव – निश्चय ही; स्यात् – रहता है; आत्म-तृप्तः – स्वयंप्रकाशित; च – तथा; मानवः – मनुष्य; आत्मनि – अपने में; एव – केवल; च – तथा; सन्तुष्टः –

पूर्णतया सन्तुष्ट; तस्य – उसका; कार्यम् – कर्तव्य; न – नहीं; विद्यते – रहता है |

Text

किन्तु जो व्यक्ति आत्मा में ही आनन्द लेता है और अपने कृष्णभावनामृत के कार्यों से पूर्णतया सन्तुष्ट रहता है उसके लिए कुछ करणीय (कर्तव्य) नहीं होता |

गीता भूषण टीका

वह व्यक्ति जो मेरे द्वारा कहे गए निष्काम कर्म और मेरी उपासना के सम्पादन के द्वारा अपने चित्त रुपी दर्पण को परिमार्जित कर चुका है और जो अपने धर्मभूत ज्ञान के द्वारा सदा ही आत्मा का दर्शन करता है उसके लिए कोई भी वैदिक कर्म करने की कोई भी आवश्यकता नहीं है | इसको दो श्लोकों में कह रहे हैं |

जिस व्यक्ति की आत्म रति होती है क्योंकि वे अपने स्वरूप को देख पाता है जिसमें निष्पापता इत्यादि आठ गुण होते हैं और जो आत्मा के स्वयं प्राकशित आनंद से तृप्त रहता है न की अन्न और पेय पदार्थों से ; जो इन गुणों से संपन्न आत्मा से पूर्ण रूपेण तृप्त रहता है न की नृत्य ,गीत आदि से तो ऐसे व्यक्ति को वेद में वर्णित कोई भी कर्तव्य करने की कोई भी आवश्यकता नहीं है जिससे वह

आत्मा का दर्शन प्राप्त कर सके क्योंकी वह सर्वदा स्वयं को आत्मा के रूप में दर्शन कर पाता है |

नोट : उपनिषद् के अनुसार आत्मा के आठ गुण होते हैं | निष्पापता , आयु हीनता , मृत्यु शून्यता , शोक हीनता ,भूख और प्यास से रहित होना , आनंदमयता और सत्य संकल्पता |

Purport

जो व्यक्ति कृष्णभावनाभावित है और अपने कृष्णभावनामृत के कार्यों से पूर्णतया सन्तुष्ट रहता है उसे कुछ भी नियत कर्म नहीं करना होता | कृष्णभावनाभावित होने के कारण उसके हृदय का सारा मैल तुरन्त धुल जाता है, जो हजारों-हजारों यज्ञों को सम्पन्न करने पर ही सम्भव हो पाटा है | इस प्रकार चेतना के शुद्ध होने से मनुष्य परमेश्वर के साथ अपने

सम्बन्ध के प्रति पूर्णतया आश्वस्त हो जाता है | भगवत्कृपा से उसका कार्य स्वयंप्रकाशित हो जाता है; अतएव वैदिक आदेशों के प्रति उसका कर्तव्य निःशेष हो जाता है | ऐसा कृष्णभावनाभावित व्यक्ति कभी भी भौतिक कार्यों में रूचि नहीं लेता और न ही उसे सुरा, सुन्दरी तथा अन्य प्रलोभनों में कोई आनन्द मिलता है |

नैव तस्य कृतेनार्थो नाकृतेनेह कश्चन ।
न चास्य सर्वभूतेषु कश्चिदर्थव्यपाश्रयः ॥१८॥

न – कभी नहीं; एव – निश्चय ही; तस्य – उसका; कृतेन – कार्यसम्पादन से; अर्थः – प्रयोजन; न – न तो; अकृतेन – कार्य न करने से; इह – इस संसार में; कश्चन – जो कुछ भी; न – कभी नहीं; च – तथा; अस्य –

उसका; सर्वभूतेषु – समस्त जीवों में; कश्चित्– कोई; अर्थ – प्रयोजन; व्यपाश्रयः – शरणागत |

Text

स्वरुपसिद्ध व्यक्ति के लिए न तो अपने नियत कर्मों को करने की आवश्यकता रह जाती है, न ऐसा कर्म न करने का कोई कारण ही रहता है | उसे किसी अन्य जीव पर निर्भर रहने की आवश्यकता भी नहीं रह जाती |

ऐसे व्यक्ति के लिए नियत कर्मों के समपादन के द्वारा आत्म साक्षात्कार रुपी अर्थ सिद्ध नहीं होता और उन कर्मों को न करने से उसे आत्मा के दर्शन प्राप्त करने में कोई अवरोध नहीं होता क्योंकि वह स्वाभाविक रूप से आत्मा का दर्शन करता है |

ऐसा नहीं है की उसे देवताओं के द्वारा उत्पन्न बाधाओं से डरने की आवश्यकता है क्युओंकी वह नियत

कर्मों की उपेक्षा करता है जिसमें देवोपासना भी होती है और इस कारण से वह अब देवताओं को प्रसन्न करने के लिए नियत कर्म करे जिसमें उनकी उपासना भी हो |
श्रुतियां कहती हैं की देवता आत्म ज्ञान विरोधी हैं

तस्मात् तद् एषां देवानां न प्रियं यद् एतन् मनुषा विदुः

जिस आत्मा को मनुष्य जानते हैं वे देवताओं को प्रिय नहीं है |

परन्तु जिस व्यक्ति ने आत्म दर्शन प्राप्त कर लिया है अर्थात जो आत्म ज्ञान में स्थित है उसके लिए सभी जीवों में कोई भी व्यक्ति आत्मा के आकर्षण में आने आले अवरोधों को हटाने के लिए चाहे नियत कर्मों को करने के द्वारा सेव्य नहीं है चाहे वह मानव हो या देवता |

ज्ञान उदय होने से पहले देवता अवरोध उत्पन्न करते हैं क्यो की नियत कर्म त्यागे जाते हैं परन्तु जब एक बार व्यक्ति आत्म के आनंद को चख लेता है तो देवता उसके आत्म दर्शन में बाधा उत्पन्न नहीं करते क्योंकि आत्मा का आनंद ऐसा प्रभाव शाली है |

ऐसा भी कहा गया है की :

तस्य ह न देवाश् च नाभूत्या ईशते आत्मा ह्य् एषां

जिसने आत्मा का साक्षात्कार कर लिया है उसके लिए देवता भी बाधा उत्पन्न नहीं करते हैं क्योंकि आत्मा सभी की प्रिय बन जाती है |

बृहद अरण्यक उपनिषद 1.4.10

देवता भी इतने शक्तिशाली नहीं होते की वह आत्मा के आनंद में बाधा उत्पन्न कर सकें ऐसे व्यक्ति के लिए

जिसने आत्मा की अनुभूति को प्राप्त कर लिया है क्योंकि आत्मा उनको भी प्रिय हो जाती है |

Purport

स्वरुपसिद्ध व्यक्ति को कृष्णभावनाभावित कर्म के अतिरिक्त कुछ भी करना नहीं होता | किन्तु यह कृष्णभावनामृत निष्क्रियता भी नहीं है, जैसा कि अगले श्लोकों में बताया जाएगा | कृष्णभावनाभावित व्यक्ति किसी की शरण ग्रहण नहीं करता –

चाहे वह मनुष्य हो या देवता | कृष्णभावनामृत में वह जो भी करता है कि उसके कर्तव्य-सम्पादन के लिए पर्याप्त है |

तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर
असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पूरुषः ॥१९॥

तस्मात् - अतः; असक्तः – आसक्तिरहित; सततम् – निरन्तर; कार्यम् – कर्तव्य के रूप में; कर्म – कार्य; समाचर – करो; असक्तः – अनासक्त; हि – निश्चय ही; आचरन् – करते हुए; कर्म – कार्य; परम् – परब्रह्म

को; आप्नोति – प्राप्त करता है; पुरुषः– पुरुष, मनुष्य |

Text

अतः कर्मफल में आसक्त हुए बिना मनुष्य को अपना कर्तव्य समझ कर निरन्तर कर्म करते रहना चाहिए क्योंकि अनासक्त होकर कर्म करने से परब्रह्म (परम) की प्राप्ति होती है |

गीता भूषण टीका

जिस व्यक्ति ने आत्म साक्षात्कार प्राप्त कर लिया है उसके लिए नियत कर्म करना व्यर्थ है इसलिए उन नियत कर्मों को कर्त्तव्य मात्र रूप में करो | जो अपने कर्मों को फल की आसक्ति से रहित हो कर के करता है वह शरीर से भिन्न आत्मा को यथावत देखने में समर्थ हो पाता है |

Purport

भक्तों के लिए श्रीभगवान् परम हैं और निर्विशेषवादियों के लिए मुक्ति परम है | अतः जो व्यक्ति समुचित पथप्रदर्शन पाकर और कर्मफल से अनासक्त होकर कृष्ण के लिए या कृष्णभावनामृत में कार्य करता है, वह निश्चित रूप से जीवन-लक्ष्य की ओर प्रगति करता है | अर्जुन से कहा जा रहा है कि वह कृष्ण के लिए कुरुक्षेत्र के युद्ध में लड़े क्योंकि कृष्ण की

इच्छा है कि वह ऐसा करे | उत्तम व्यक्ति होना या अहिंसक होना व्यक्तिगत आसक्ति है, किन्तु फल की आसक्ति से रहित होकर कार्य करना परमात्मा के लिए कार्य करना है | यह उच्चतम कोटि का पूर्ण कर्म है, जिसकी संस्तुति भगवान् कृष्ण ने की है |

नियत यज्ञ, जैसे वैदिक अनुष्ठान, उन पापकर्मों की शुद्धि के लिए किये जाते हैं जो इन्द्रियतृप्ति के उद्देश्य से किये

गए हों | किन्तु कृष्णभावनामृत में जो कर्म किया जाता है वह अच्छे या बुरे कर्म के फलों से परे है | कृष्णभावनाभावित व्यक्ति में फल के प्रति लेशमात्र आसक्ति नहीं रहती, वह तो केवल कृष्ण के लिए कार्य करता है | वह समस्त प्रकार के कर्मों में रत रह कर भी पूर्णतया अनासक्त रहता है |